पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या............ आगत संख्या............

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित हैं। इस तिथि सहित ३०वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

ब्राह्मण-बोध-माला। पुस्तक १

ॐ

शत-पथ-बोधामृत।

लेखक और प्रकाशक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि० सातारा).

प्रथमवार १०००

विक्रम संवत १९७७ ईसवी सन १९२१

मूल्य चार आने।

बालकोंकी धर्मशिक्षा ।

बालक और बालिकाओं की धर्मशिक्षा के लिये निम्न ग्रंथ विशेष प्रकारसे बनाये हैं—

(१) **बालकोंकी धर्मशिक्षा** । प्रथम भाग । प्रथम श्रेणीकी धर्मशिक्षा के लिये । मूल्य -) एक आना ।

(२) **बालकोंकी धर्मशिक्षा** । द्वितीय भाग । द्वितीय श्रेणीकी धर्मशिक्षा के लिये । मूल्य =) दो आने ।

(३) **वैदिक-पाठ-माला** । प्रथम पुस्तक । तृतीय श्रेणीकी धर्मशिक्षा के लिये । मूल्य ≡) तीन आने ।

अन्य श्रेणियों के लिये ग्रंथ तैयार हो रहे हैं ॥ अपने अपने स्थानके पाठशालाओंमें इनहींकी पढाई शुरू कीजिए और बालकोंके अंतःकरणोंमें वैदिक धर्मका वायु—मंडल बनाइए ।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल,
औंध (जि. सातारा)

ब्राह्मण-बोध-माला ।

प्रथम-पुस्तक ।

शतपथ-बोधामृत ।

प्रथम भाग । (प्रथम कांड ।)

लेखक और प्रकाशक ।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

विक्रम संवत् १९७७, शालिवाहन शक १८४२,

ईसवी सन १९२०

बोध का आधार।

बोधसे ही हम सब की उन्नति होनेवाली है। इस लिये जहांसे बोध प्राप्त हो सके, वहांसे प्राप्त करना चाहिए। आर्ष ग्रंथोंमें शतपथ ब्राह्मण अत्यंत प्राचीन ग्रंथ है। वैदिक वाङ्मयका विचार करनेवालोंको शतपथ पढनेकी आवश्यकता है। शतपथका पढना अत्यंत कठिन है। इस लिये उस ग्रंथको सब पढ नहीं सकते। इसी कारण उसका उपदेश सबके हृदयोंतक पहुंच नहीं सकता।

इस कठिनता को दूर करनेके लिये शतपथके बोध वचनोंका संग्रह करनेका प्रयत्न इस पुस्तकमें किया है। शतपथमें सहस्रों बोध वचन हैं। सबका संग्रह करनेसे बडा ग्रंथ होगा। यदि इस प्रकारका ग्रंथ रचनेके लिये ग्राहकोंसे उत्साह मिला, तो विस्तृत ग्रंथ भी तैयार हो सकता है।

इस प्रकारके वचनोंका मनन करनेसे शतपथके तत्वज्ञानका पता लग सकता है। आशा है कि वैदिक वाङ्मयके संशोधनमें पाठक भी सहायता करेंगे।

औंध (जि० सातारा)
१९।११।२०.

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय-मंडल.

प्रकाशक—श्रीपाद दामोदर सातवळेकर, (स्वाध्याय मंडलके लिये)
(औंध, जि० सातारा.)

मुद्रक—रामचंद्र येसु शेडगे, 'निर्णयसागर' छापखाना,
२३, कोलभाट गल्ली, मुंबई.

शतपथ-बोधामृत।

(प्रथम कांड।)

प्रथम अध्याय।

(ब्राह्मण १)

(१) अ-मेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति।

Man is impure on account of his speaking untruth.

निश्चयसे मनुष्य अपवित्र है जो असत्य बोलता है।

ॐ ॐ ॐ

(२) तेन पूतिरन्तरतः।

Therefore internal purification is required.

इस लिये आंतरिक शुद्धि आवश्यक है।

ॐ ॐ ॐ

(३) मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानि।

After becoming pure, I will enter on the vow.

पवित्र बन कर नियम पालन करूंगा।

ॐ ॐ ॐ

(४) पवित्रपूतो व्रतमुपायानि ।

Having become purified through the purifying one, I will enter on the vow.

पवित्रके साथ शुद्ध बनकर व्रतका पालन करूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

(५) द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । सत्यं चैवाऽनृतं च ॥

Twofold, verily, is this, there is no third, viz., truth and untruth.

इसमें दो ही है, तीसरा नहीं है । सत्य और असत्य ।

ॐ ॐ ॐ

(६) सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः ॥

Verily the Devas are truth & men are untruth.

निश्चयसे देव सत्य हैं और मनुष्य असत्य हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(७) इदमहमनृतात्सत्यमुपैमीति तन्मनुष्येभ्यो देवानुपैति ॥

I now enter from untruth into truth, he passes from men to the Devas.

अब मैं असत्य छोडकर सत्यको पकडता हूं, ऐसे निश्चयसे वह मनुष्योंमेंसे देवोंमें पहुंचता है ।

ॐ ॐ ॐ

(८) स वै सत्यमेव वदेत् ॥

Let him then only speak what is true.

वह सत्य ही बोले.

ॐ ॐ ॐ

(९) एतद्ध वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यं । तस्मात्ते यशः ।

For this vow indeed the Devas do keep, that they speak the truth ; and for this reason they are glorious.

देव निश्चयसे यह ही व्रत आचरते हैं जो सत्य है । इसलिये वे यशस्वी होते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(१०) यशो ह भवति य एवं विद्वान् सत्यं वदति ॥

Glorious therefore is he who, knowing this, speaks the truth.

वह भी यशस्वी होता है जो ऐसा जानकर सत्य बोलता है।

ॐ ॐ ॐ

(११) इदमहं य एवास्मि सोऽस्मि।

Now I am he who I really am.

अब मैं वह ही हूं जो मैं वास्तवमें हूं।

ॐ ॐ ॐ

(१२) न हि तदवकल्पते यद्ब्रूयादिदमहं
सत्यादनृतमुपैमि ॥

It would not be becoming for him to say, I enter from truth into untruth.

वैसा बोलना उसके लिये योग्य नहीं कि मैं सत्यसे असत्यको स्वीकारता हूं।

ॐ ॐ ॐ

(१३) मनो ह वै देवा मनुष्यस्याजानन्ति ॥

Assuredly, the Devas see through the mind of man.

निश्चयसे देव मनुष्यको मनके अंदरसे देखते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१४) तद्वेवानवक्लृप्तम्। यो मनुष्येष्वनश्नत्सु
पूर्वोऽश्नीयात् ॥

Now it would even be unbecoming for him to take food, before guests have eaten.

यह निश्चयसे अयोग्य है कि जो अन्य मनुष्यों (अतिथियों) का भोजन होनेसे पूर्व अकेलेनें ही भोजन करना है।

ॐ ॐ ॐ

(१५) देवान्वा एष उपावर्तते यो व्रतमुपैति ॥

He who enters on the vow approaches the Devas.

जो नियम पालन करता है वह देवोंको प्राप्त होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१६) अधस्तादिव हि श्रेयस उपचारः ॥

From below, as it were, one serves one's superior.

नीचेसेही बडोंकी सेवा की जाती है ।

ॐ ॐ ॐ

(१७) अ–निरुक्तो वै प्रजा–पतिः । प्रजा–पतिर्यज्ञः ॥

Prajâpati is undefined, Prajâpati is sacrifice.

प्रजापति अवर्णित है । प्रजापति यज्ञ है ।

ॐ ॐ ॐ

(१८) कस्त्वा युनक्ति । स त्वा युनक्ति ॥

Prajâpati yokes thee, he joins thee.

परमात्मा तुमको नियुक्त करता है । वह ही तुमको नियुक्त करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१९) अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम् ॥

All this is pervaded by Âpas (pervading element).

इस सबमें व्यापक-तत्त्व अर्थात् आप् भरा है ।

ॐ ॐ ॐ

(२०) देवान् ह वै यज्ञेन यजमानांस्तानसुररक्षसानि-
ररक्षुर्न यजध्वमिति । तद्यदरक्षंस्तस्माद्रक्षांसि ॥

Whilst the Devas were engaged in performing sacrifice, the Asuras and Rākshasas forbade them, saying, ye shall not sacrifice; and because they forbade, they are called Râkshasas.

देव यज्ञ करते थे, उनको राक्षसोंने प्रतिबंध किया और कहा कि यज्ञ न करो । इस लिये प्रतिबंध करनेवाले राक्षस कहलाते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(२१) एष एतं वज्रमुद्यच्छति तस्याऽभयेऽनाष्ट्रे निवाते यज्ञं तनुते ॥

He takes up this thunderbolt, and in its safe and foeless shelter they spread the sacrifice.

वह इस शस्त्रको धारण करता है और उस शस्त्रके अभयमें और शत्रुरहित आश्रयमें सत्कर्मका प्रचार करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(२२) गृहा वै प्रतिष्ठाः ॥

A house is safe resting-place.

सुरक्षित विश्रामका स्थान ही घर है ।

ॐ ॐ ॐ

(२३) योषा वा आपो वृषाऽग्निः । मिथुनमेवैतत्प्रजननं क्रियते । एवमेव हि मिथुनं क्लृप्तं । उत्तरतो हि स्त्री पुमांसमुपशेते ॥

Water is female and fire is male : Hence a copulation productive of offspring is thereby effected and in this way alone a regular copulation can take place, since the woman lies on the left side of the man.

जल स्त्री है और अग्नि पुरुष है । प्रजा उत्पन्न करनेके लिये जोडा बनाया जाता है । इसी प्रकार जोडा होता । पुरुषकी उत्तर दिशामें स्त्री बैठती है ।

ॐ ॐ ॐ

(२४) ताः नान्तरेण संचरेयुः ।

Let nobody pass between them.

उनके बीचमें से कोई न गुजरे । (पतिपत्नीमें कोई झगडा न खडा करे)

ॐ ॐ ॐ

(२५) द्वंद्वं वै वीर्यम् ॥

A pair means strength.

द्वंद्व निश्चयसे बल है ।

ॐ ॐ ॐ

(२६) यदा वै द्वौ संरभेते अथ तद्वीर्यं भवति ॥

When two undertake anything, there is strength in it.

जब दो मिलकर कार्य प्रारंभ करते हैं, उनमें बल आता है ।

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(२७) कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥ (वा.य.१।६)

For the work I take you, for accomplishment I take you.

उद्योग के लिये और पूर्णताके लिये मैं तुमको स्वीकारता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(२८) अथ वाचं यच्छति ।

He then controls his speech.

अब वह अपनी वाणी का नियमन करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(२९) वाग्वै यज्ञोऽविक्षुब्धो यज्ञं तनवा इति ॥

Speech means undisturbed sacrifice ; so that in so doing he thinks: may I accomplish the sacrifice.

वाचा ही प्रशांत यज्ञ है । इससे मैं यज्ञकी पूर्णता करूंगा ऐसा वह मानता है ।

ॐ ॐ ॐ

(३०) यज्ञाद्यज्ञं निर्ममा इति ॥

From the sacrifice I will perform the sacrifice.

यज्ञसे यज्ञ निर्माण करता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(३१) यतो ह्येव युंजंति ततो विमुंचन्ति ॥

From where they yoke, they also unyoke.

जहांसे संयुक्त करते हैं वहांसे ही बंधनसे मुक्त करते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(३२) य एनद्वहन्त्यग्निदग्धमिवैषां वहं भवति ॥
The shoulder of those that carry this, becomes as if burnt by fire.

जो खंदेसे उठाकर खेंचते हैं उनके ही खंदे अग्निसे जले हुए के समान होते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(३३) धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व ॥ (य.१।८)
Injure thou the injurer! injure him that injures us all.

दुःख देनेवालेका नाश करो, जो हम सबका घात करता है उसका नाश करो ।

ॐ ॐ ॐ

(३४) अर्धमासशो वाऽहमसपत्नान् धूर्वामि ॥
Every half-month I destroy the enemies.

प्रत्येक अर्धमासमें मैं शत्रुओंका नाश करता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(३५) देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूततमम् ॥
To the Devas thou belongest, thou the best carrying one, the most firmly joined, the most richly filled, the most agreeable, the best caller of Devas.

तूं देवोंकाही है, जो तूं उत्तम चलानेवाला, अत्यंत स्थिर, परिपूर्ण, प्रीतिकरने योग्य और देवोंको बुलानेवाला है ।

ॐ ॐ ॐ

(३६) अह्रुतमसि हविर्धानं। दृंहस्व। मा ह्वाः ॥
Thou art unbent, the supporter of food, be thou firm, waver not.

तूं तेढा नहीं है, तूं अन्नका आश्रय है, स्थिर रहो, चंचल न हो ओ ।

ॐ ॐ ॐ

(३७) विष्णुस्त्वा क्रमतामिति ॥ (य. १।९)

May Vishṇu ascend thee.

व्यापक ईश्वर तुमको ऊपर उठावे ।

ॐ ॐ ॐ

(३८) स देवेभ्य इमां विक्रांतिं विचक्रमे ॥

He obtained for the Devas this all-pervading power.

उसने देवोंके लिये ही यह पराक्रमकीशक्ति दी है ।

ॐ ॐ ॐ

(३९) उरु वातायेति प्राणो वै वातः ॥

Wide open be thou to the wind, for wind means life.

तूं वायुके लिये खुला रहो क्योंकि वायु ही प्राण है ।

ॐ ॐ ॐ

(४०) यच्छन्तां पंचेति ॥ (य. १।९)

Let the five take.

पांचों प्राप्त करें ।

ॐ ॐ ॐ

(४१) भूताय त्वा नारातये ।

For prosperity I leave thee, and not for uncharitableness.

उन्नति के लिये मैं तुम्हें छोडता हूं, न कि दान-हीन-ता के लिये ।

ॐ ॐ ॐ

(४२) स्वरभि विख्येषम् ॥ (य. १।११)

May I perceive the light.

मैं प्रकाशका अनुभव कर सकूं ।

ॐ ॐ ॐ

(४३) दृंहन्तां दुर्याः पृथिव्याम् ॥

May houses stand firm on this earth.

पृथिवीपर घर स्थिर रहें ।

ॐ ॐ ॐ

(४४) तथा नानु प्रच्यवन्ते तथा न विक्षोभन्ते ॥
They may not break down, nor they crush.
वे न गिर जांय और न नष्ट होवें ।

ॐ ॐ ॐ

(४५) पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयामीति । मध्यं वै नाभिः । मध्यमभयम् ॥

On the navel of the earth I place thee, for navel means the centre and the centre is safe from danger.

मैं तुमको पृथ्वीके नाभीपर रखता हूं । क्यों कि नाभि का अर्थ मध्य है और मध्यहि निर्भय होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(४६) अदित्या उपस्थ इत्युपस्थ इवैनदभार्षुरिति वा आहुर्यत्सुगुप्तं गोपायन्ति ।

In the lap of Bound-less, for when people guard anything very carefully, they commonly say that they carried it in their lap.

अमर्याद की गोदमें रखता हूं । जिस समय किसी की उत्तम प्रकारसे रक्षा करनी होती है उस समय कहते हैं कि गोदमें रखते हैं ।

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(४७) परिददाति गुप्त्या अस्यै च पृथिव्यै ॥

He gives this for his protection and for the country.

अपने और भूमिके संरक्षणके लिये दान देता है ।

ॐ ॐ ॐ

(४८) पवित्रे स्थ ॥
Purifiers are ye.
आप शुद्ध करने वाले हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(४९) अयं वै पवित्रं योऽयं पवते ॥
Purifier is this who purifies.
पवित्र कारक यह ही है कि जो शुद्ध करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(५०) ऐते वा उत्पवितारो यत्सूर्यस्य रश्मयः ॥
They, the rays of the sun, are certainly purifying.
सूर्यके किरण निःसंदेह शुद्धता करनेवाले हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(५१) अग्र इदमद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञ पतिं देवयुवमिति ॥
Forward now lead this sacrifice, forward the protector of sacrifice, the liberal, god-loving.
आजही यज्ञ–सत्कर्म– को आगे बढाइए, यज्ञके पालक को आगे बढाइए, जो उदार और ईश्वरका भक्त है ।

ॐ ॐ ॐ

(५२) दैव्याय कर्मणे शुंधध्वम् ॥ (य. १।१३)
Be ye pure for the divine work.
दिव्य कर्म के लिये शुद्ध हो जाइए ।

ॐ ॐ ॐ

(५३) यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुंधामि ॥
Whatever inpure, that obstructs, I purify for you.
जो अशुद्धता, घात करती है, मैं आपके लिये शुद्ध करताहूं ॥

प्रथम अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(५४) सैषा त्रयी विद्या यज्ञः ॥
This three-fold science is the sacrifice.
तीन प्रकारका विज्ञान ही यज्ञ है ।

ॐ ॐ ॐ

(५५) शर्माऽसि ॥ (य. १।१४)
Bliss art thou.
तूं सुख है ।

ॐ ॐ ॐ

(५६) अवधूतं रक्षोऽवधूता अरातयः ॥ (य.१।१४)
Shaken off are the Râkshasas, shaken off are the enemies.
राक्षसों और शत्रुओंको भगा दिया है ।

ॐ ॐ ॐ

(५७) यद्यस्यामेध्यमभूत्तद्यस्यै तदवधुनोति ॥
He shakes off whatever inpurity there may have been.
वह दूर करता है जो कुछ अशुद्धता वहां होती है ।

ॐ ॐ ॐ

(५८) नेदन्योऽन्यं हिनसाते ॥
They will not hurt each other.
वे एक दूसरेका घातपात नहीं करेंगे ।

ॐ ॐ ॐ

(५९) अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनम् ॥
Thou art the body of fire and the releaser of speech.
तू अग्निका देह और वाणीका प्रेरक है ।

ॐ ॐ ॐ

(६०) देववीतये त्वा गृह्णामि ॥

I accept thee for the pleasure of God.

ईश्वरकी संतुष्टताके लिये मैं तुम्हारा स्वीकार करताहूं ।

ॐ ॐ ॐ

(६१) संस्कुरु साधुसंस्कृतं संस्कुरु ॥

Do thou prepare it thoroughly, get it quite ready.

उत्तम संस्कार करो, उत्तम सुसंस्कारोंसे सिद्ध करो ।

ॐ ॐ ॐ

(६२) मधुजिह्वो वै स देवेभ्य आसीद्विषजिह्व असुरेभ्यः ॥

Honey-tongued indeed was he for the Devas and poison-tongued for the devils.

मीठी जबान वाला वह देवोंके लिये था और कडवी जबान वाला राक्षसोंके लिये था ।

ॐ ॐ ॐ

(६३) इषमूर्जमा वद त्वया वयं संघातं संघातं जेष्म ॥

Food and strength do thou call hither! with thy help may we conquer in every battle.

अन्न और बल को यहां पास बुलाओ । इसकी सहायतासे हम प्रत्येक युद्धमें विजय पायेंगे ।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण १)

(६४) एकं सह करवाव, समानं करवाव ॥

Let us make that one together, let us make it equal.

हम सब साथ मिलकर एक कार्य करेंगे, तथा समानतासे करेंगे ।

ॐ ॐ ॐ

(६५) धृष्टिरसि ॥ (य.१।१७)

Bold art thou.

तू धैर्यशाली है ।

ॐ ॐ ॐ

(६६). अपाग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादं सेध ॥

O light, cast off that fire which eateth raw flesh ! Drive away the corpse-eating one.

हे तेजस्वी । जो कच्चा मांस खाता है उस अग्निको दूर करो । तथा उसको भगाओ कि जो मुर्दा खाता है ।

ॐ ॐ ॐ

(६७) पृथिव्या एव रूपेणैतदेव दृंहत्येतेनैव द्विषन्तं भ्रातृव्यमवबाधते ॥

Under the form of the earth he renders this firm, and chases away the spiteful enemy.

भूमीके रूपसे वह इसको दृढ बनाता है और निंदक शत्रू का प्रतिकार करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(६८) ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि । भ्रातृव्यस्य वधाय ॥

Thee, devoted to the Learned, to the Brave, and to the Kinsmen, I receive for the destruction of the enemy.

ज्ञानी, शूर और सजातीयोंके साथ प्रेम करनेवाले आपका मैं शत्रू-विनाशके लिये स्वीकार करता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(६९) तद्ब्रह्म च क्षत्रं चाशास्त उभे वीर्ये ॥

He prays for the welfare of the Learned and Brave, because these two are the towers of strength.

ज्ञानी और शूरोंका हित चाहता है क्योंकि ये दो शक्तिके पुंज हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(७०) भूमा वै सजाताः ॥

Kinsmen are wealth.

स्वजाती ही धन है ।

ॐ ॐ ॐ

(७१) ब्रह्म गृभ्णीष्व ॥

Accept holy knowledge (or holy action).

उत्तम ज्ञान (किंवा पवित्र कर्म) प्राप्त करो ।

ॐ ॐ ॐ

(७२) धरुणमसि ॥

A supporter art thou.

तू आधार है ।

ॐ ॐ ॐ

(७३) धर्त्रमसि ॥

A stay art thou.

तू धारक है ।

ॐ ॐ ॐ

(७४) भृगूणामंगिरसां तपसा तपध्वम् ॥

May ye be purified by the heat of Bhrigus and Angiras.

भृगु और अंगिराओंके तपसे आप तपकर शुद्ध हूजिए ।

ॐ ॐ ॐ

(७५) प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घमायुरनु प्रसितिमायुषे धाम् ॥

I take thee for out-breathing, in-breathing and for through-breathing, may I impart a long duration to the life.

प्राण, उदान और व्यानके लिये तेरा स्वीकार करता हूं । मुझे दीर्घ आयु प्राप्त होवे ।

ॐ ॐ ॐ

(७६) महीनां पयोऽसि ॥
Thou art the milk for the great.
तूं श्रेष्ठोंके लिये दूध है ।

ॐ ॐ ॐ

द्वितीय अध्याय (ब्राह्मण २)

(७७) समाप ओषधीभिः ॥
Let the waters mingle with the plants.
औषधियोंके साथ जल उत्तम रीतीसे मिले ।

ॐ ॐ ॐ

(७८) समोषधयो रसेन ॥
Let the plants mingle with the sap.
औषधियां रसके साथ रहें ।

ॐ ॐ ॐ

(७९) सं रेवतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् ॥
The shining one should be mixed with the sweet ones.
तेजस्वी मिलें मधुरता धारण करनेवालोंके साथ ।

ॐ ॐ ॐ

(८०) सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् ॥
Let the sweet mingle with the sweet.
मधुर मधुरोंके साथ मिलें ।

ॐ ॐ ॐ

(८१) सं रसवत्यो रसवतीभिः पृच्यन्ताम् ॥
Let the savoury be mixed with the savoury.
रसवाले रसवालोंके साथ मिलें ।

ॐ ॐ ॐ

(८२) जनयत्यै त्वा सं यौमि ॥
For generation I unite thee.
प्रजाकी उत्पत्तिके लिये मैं तुमको संयुक्त करता हूं ।

ॐ ॐ ॐ

(८३) श्रिये अन्नाद्याय ॥

For prosperity and for food &c. I unite thee.

उन्नति और अन्न आदि के लिये भी ।

ॐ ॐ ॐ

(८४) घर्मोऽसि ॥

Heat art thou.

तू उष्णता है ।

ॐ ॐ ॐ

(८५) विश्वमायुरिति तदायुर्दधाति ॥

Life-sustaining is he, therefore he obtains life.

वह सब आयु का धारक है इसलिये आयु प्राप्त करता है ।

ॐ ॐ ॐ

(८६) उरु प्रथस्व ॥

Spread widely.

बहुत विस्तार करो ।

ॐ ॐ ॐ

(८७) नेद्ध्यृद्धं यज्ञे करवाणि ॥

I may not do any thing that is unfair in the sacrifice.

मैं यज्ञ में कोई विरुद्ध कार्य न करूं ।

ॐ ॐ ॐ

(८८) मा भेर्मा सं विक्थाः ॥

Be not afraid! Shrink not!

निर्भय रहो । पीछे न हटो ।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(८९) उपैवेम एनो गच्छन्तु येऽस्य वध्यस्यावेदिषुः ॥

Let those be guilty of the sin who know about his going to be killed.

वेभी दोषी समझे जांय कि जिनको उनके वधके विषयमें पता था।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(९०) वायुरसि तिग्मतेजा इति । एतद्वै तेजिष्ठं तेजो यदयं योऽयं पवते।

The sharp-lustered Vâyu art thou. That is the brilliant luster which here blows.

तू तीक्ष्ण तेजवाला वायु है। यह ही तीक्ष्ण तेज है कि जो बहता है।

ॐ ॐ ॐ

(९१) देवाश्च वा असुराश्च । उभये प्राजापत्याः पस्पर्धिरे ते ह स्म यद्देवा असुरान् जयन्ति ततो ह स्मै वैनान् पुनरुपोत्तिष्ठन्ति ॥

The Devas and Asuras, both of them sprung from Prajapati, were contending for superiority. The Devas vanquished the Asuras; and yet these afterwards harassed them again.

प्रजापतिसे ही देव और असुर उत्पन्न हुए हैं । वे आपसमें स्पर्धा करते रहे। देवोंने असुरोंका पराभव किया । परंतु वे फिर बार बार देवोंको कष्ट देते रहे।

ॐ ॐ ॐ

(९२) ते देवा ऊचुः । जयामो वा असुरांस्ततस्त्वेव नः पुनरुपोत्तिष्ठन्ति कथं न्वेनाननपजय्यं जयेम ।

The Devas then said we do, no doubt, vanquish the Asuras, but never-the-less they afterward again harass us. How then can we vanquish them so that we need not fight them again ?

देव बोले कि, हम असुरोंका[1] पराजय करते हैं, परंतु वे फिर भी हमें कष्ट देते हैं । किस प्रकार उनका ऐसा पराभव करें कि जिससे उनके साथ फिर झगडना न पडेगा ?

ॐ ॐ ॐ

(९३) ओषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम् ॥

May I not injure the root of any plant.

मैं किसी औषधीके जडोंका भी घात पात न करूं ।

द्वितीय अध्याय

(ब्राह्मण ५)

(९४) असुरा मेनिरेऽस्माकमेवेदं खलु भुवनमिति ॥

The Asuras thought: "To us alone assuredly belongs this world".

राक्षसोंनें समझा कि निश्चयसे हमारे लियेही यह भूमी है ।

ॐ ॐ ॐ

(९५) संग्रामो वै क्रूरं । संग्रामे हि क्रूरं क्रियते । हतः पुरुषो हतो अश्वः शेते ॥

The bloody one no doubt is the battle, for in the battle bloody deeds are done and slain lie man and horse.

---

१ सद्भाव देव हैं और दुष्टभाव असुर हैं । दुष्ट भावोंको पराजित करने पर भी वे वारंवार फिर उठते ही हैं ।

निश्चयसे युद्ध क्रूर कर्म है । क्योंकि युद्ध में क्रूरता की जाती है। युद्धमें मनुष्य और घोडे मारे जाते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(९६) यच्चस्यै क्रूरमभूत्तच्चस्या एतदहार्षीत् ॥

What there was bloody on it that he thereby removes from it.

जो कुछ उसमें क्रूरता थी, उसको दूर किया।

तृतीय अध्याय
(ब्राह्मण १)

(९७) यथा वै देवानां चरणं तद्वा अनु मनुष्याणाम् ॥

The course pursued among the Devas is in accordance with that pursued among men.

जिस प्रकार देवोंका आचरण होता है उसीप्रकार मनुष्योंका।

ॐ ॐ ॐ

(९८) अथ पात्राणि निर्णिजति । तैर्निर्णिज्य परिवेविषति ॥

They rinse the vessels, and having rinsed them they serve up the food with them.

वे बर्तन मांजकर शुद्ध करते हैं और शुद्ध बर्तनोंसे परोसते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(९९) योक्त्रेण हि योग्यं युंजन्ति ।

With a yoke they yoke the fit (animal).

जुएसे योग्य कोही जोतते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१००) अस्ति वै पत्न्या अमेध्यं यदवाचीनम् ॥

Impure indeed is that part of woman which is below the navel.

नाभीके नीचला स्त्रीका भाग अपवित्र है।

ॐ ॐ ॐ

(१०१) रेत आज्यम् ।

The butter represents seed.

घी वीर्य अर्थात् बीज है ।

ॐ ॐ ॐ

(१०२) तथो ह यज्ञात्पत्नीं नान्तरेति ।

Therefore, he does not exclude the wife from the sacrifice.

इसलिये धर्मपत्नीको यज्ञसे दूर वह (पति) नहीं रखता ।

ॐ ॐ ॐ

(१०३) सत्यं वै चक्षुः । सत्यं हि वै चक्षुः । तस्माद्यदिदानीं द्वौ विवदमानावेयातामहमदर्शमहमश्रौषमिति । य एव ब्रूयादहमदर्शमिति तस्मा एव श्रद्दध्याम तत्सत्येनैवैतत्समर्द्धयति ॥

The eye assuredly is the truth, for the eye is indeed the truth. If therefore, two persons were to come disputing with each other and saying 'I have seen it!' 'I have heard it!' we should believe him who said 'I have seen it!' and not the other. Hence he thereby causes it to increase by means of the truth.

नेत्र ही सत्य है । निश्चयसे आंख ही सत्य है । यदि दो मनुष्य आपसमें विवाद करते हुए हमारे पास आगये, उनमेंसे एक कहता है कि 'मैंने देखा है' और दूसरा कहता है कि 'मैंने सुना है ।' हम उसी का सत्य मानेंगे कि जिसने कहा कि 'मैंने देखा है' न कि दूसरेका । इस लिये सत्यसे इसकी वृद्धि करता है ।

तृतीय अध्याय
(ब्राह्मण २)

(१०४) पुरुषो वै यज्ञः । पुरुषस्तेन यज्ञो यदेनं पुरुषस्तनुते । एष वै तायमानो यावानेव पुरुषस्तावान् विधीयते तस्मात् पुरुषो यज्ञः ॥

Now the sacrifice is the man. The sacrifice is the man for the reason that the man performs it; and that it is made of exactly the same extent as the man: this is the reason why the sacrifice is the man.

मनुष्य ही यज्ञ है । इसलिये कि मनुष्य ही उसको करता है । और मनुष्य उतना ही सत्कर्म करता है कि जितना वह स्वयं होता है । इस लिये यज्ञही मनुष्य है ।

ॐ ॐ ॐ

(१०५) इमा विशः क्षत्रियाय बलिं हरन्ति । ... । क्षत्रियस्यैव वशे सति वैश्यं पशव उपतिष्ठन्ते । ... । यदोत क्षत्रियः कामयतेऽथाह वैश्य मयि यत्ते परो निहितं तदाहरेति । तं जिनाति त्वद्यथा त्वत्कामयते तथा सचतऽएतेनो ह तद्वीर्येण ॥

Thereby the people pay tribute to the Kshatriya ... Vaishya under the rule of the Kshatriya, becomes possessed of cattle; ... whenener the Kshatriya likes, he says, 'Hallo, Vaishya, just bring to me what thou hast stored away.' Thus he both subdues him and obtains possession of anything he wishes by dint of his very energy.

इस लिये लोक क्षत्रिय को कर देते हैं । ... क्षत्रियके शासनमें

रहता हुआ वैश्य पशु आदि प्राप्त करता है । ... जब क्षत्रिय चाहता है, कहता है कि 'हे वैश्य ! जो कुछ तुम्हारे पास संग्रह है, ले आओ' इस प्रकार अपनी शक्तिके कारण केवल आज्ञासे ही क्षत्रिय वैश्यको आधीन रखता और चाहे सो प्राप्त कर सकता है ।

तृतीय अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१०६) यत्र वा अस्यै बहुलतमा ओषधयः । तदस्या उपजीवनीयतमम् ।

Where the plants are most abundant on her, there the means of subsistence are most amply afforded by her.

जहां पृथ्वीपर बहुत औषधियां होतीं हैं वहां ही जीवनका साधन (अन्न) बहुत प्राप्त होता हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(१०७) अधरमूला इव हीमा अस्यां पृथिव्यामोषधयः प्रतिष्ठितास्तस्मादधरमूलं स्तृणाति ॥

For it is with their roots below that those plants are firmly established in this earth. For this reason he spreads it with roots below.

वृक्ष अपने जडोंके आधार से ही दृढ रहते हैं, इसलिये नीचे जडोंके साथही वह फैलाता है ।

तृतीय अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(१०८) ते वा आर्द्राः स्युः । एतद्ध्येषां जीवमेतेन सतेजस एतेन वीर्यवन्तस्तस्मादार्द्राः स्युः ॥

They should be fresh; for that is their living

element, by that they are vigorous, by that possessed of strength for this reason they should be fresh.

वे नवीन रहें। नवीनता ही इनका जीवन है, इसीसे तेज और वीर्य होता है। इसलिये नवीन रहें।

ॐ ॐ ॐ

(१०९) इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै ।

Thou art Indra's right arm for the security of all!

तू इंद्र (क्षत्रिय) का सीधा हाथ सबकी रक्षा के लिये है।

ॐ ॐ ॐ

(११०) सूर्यो हि नाष्ट्राणां रक्षसामप हन्ता ।

For the sun is the repeller of the evil spirits, the Râkshasas.

सूर्य ही विनाशक राक्षसों को दूर करनेवाला है।

ॐ ॐ ॐ

(१११) ध्रुवा असदन्नृतस्य योनाविति ।

Safely indeed they sat down in the lap of divine truth.

दिव्य सत्यकी गोदमें वे सुरक्षित बैठते हैं।

तृतीय अध्याय
(ब्राह्मण ५)

(११२) सर्वं वै प्रजापतिः ।

Verily Prajâpati is all.

प्रजापति सब कुछ है।

ॐ ॐ ॐ

(११३) अनिरुक्तं वा उपांशु सर्वं वा अनिरुक्तं ।

What is spoken in a low voice is undefined and undefined is the 'All'.

छोटी आवाज में किया हुआ भाषण अव्यक्त होता है। सब कुछ अव्यक्त ही है।

ॐ ॐ ॐ

(११४) गायत्री वै प्राणः। स यत्कृत्स्नां गायत्रीमन्वाह। तत्कृत्स्नं प्राणं दधाति।

Gâyatri is indeed breath; and that reciting a complete Gâyatri verse, he accordingly bestows complete breathing.

गायत्री ही प्राण है। एक गायत्री मंत्रका जप करनेसे एक पूर्ण प्राण की धारणा होती है।

चतुर्थ अध्याय

(ब्राह्मण १)

(११५) प्रेति वै प्राण एत्युदानः। प्राणोदानावेवैतद्धाति।

'Pra' (forth) clearly means outbreathing, and 'Â' (hither) means inbreathing: hence he thereby obtains outbreathing and inbreathing.

'प्र' का निश्चयसे अर्थ प्राण है और 'आ' का अर्थ उदान है। इनसे वह प्राण और उदान धारण करता है।

ॐ ॐ ॐ

(११६) कथं नु न इमे लोका वितरां स्युः। कथं न इदं वरीय इव स्यादिति।

How could these worlds of ours become farther apart from one onother ? How could there be more space for us ?

ये हमारे लोक एक दूसरे से दूर किस प्रकार होंगे, अर्थात् हमारे लिये अधिक विस्तृत स्थान किस प्रकार मिलेगा ?

ॐ ॐ ॐ

(११७) देवाश्च वा असुराश्चोभये प्राजापत्याः पस्पर्धिरे। तान्स्पर्धमानान्गायत्र्यन्तरा तस्थौ । या वै सा गायत्र्यासीदियं वै सा पृथिवी।

Devas & Asuras, both of them sprang from Prajâpati, were contending for superiority. The Gâyatri stood between them. She was the same as this earth.

देव और असुर-दोनों प्रजापति के पुत्र-उच्च अधिकार के लिये स्पर्धा करते थे। उनके बीचमें गायत्री खडी रही। जो गायत्री थी वह ही यह पृथिवी है।

ॐ ॐ ॐ

(११८) नेदू व्यृद्धं यज्ञे करवाणीति।

He should not do anything that is inauspicious at the sacrifice.

यज्ञके समय अपवित्रता न की जावे।

चतुर्थ अध्याय

(ब्राह्मण २)

(११९) अथेदमप्येतर्हि ज्ञातीनां यं गरिष्ठे युंजंति। तमुपमदन्ति वीर्यवान्वै त्वमस्यलं वै त्वमेतस्माऽअसीति।

Even as in our own days, when they appoint any one from among their kinsmen to the chief office, they cheer him up saying, 'Surely, thou art vigorous; surely, thou art equal to this!'

आज कलके समयमें भी जब कि अपनी जातियोंमेंसे योग्य पुरुषको मुख्य अधिकार के लिये चुनते हैं तब उसको उत्तेजित करते हैं और कहते हैं कि 'तू बलवान है और इस स्थान के लिये योग्य है।'

ॐ ॐ ॐ

(१२०) ब्रह्म ह्यग्निः ।

Agni, indeed, is Brahman.

निश्चयसे अग्नि ही ब्राह्मण है ।

ॐ ॐ ॐ

(१२१) स्वं महिमानमावह ।

Your own greatness bring hither.

अपनी महत्ताको यहां ले आओ ।

चतुर्थ अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१२२) बृहच्छोचा यविष्ठ्येति ।

Shine forth, O youngest, brilliantly.

हे तरुण ! तेजस्विताके साथ प्रभावित होकर बढो ।

ॐ ॐ ॐ

(१२३) श्रोत्रं वै पृथु श्रवाय्यं श्रोत्रेण हीदमुरु पृथु शृणोति ।

'For hearing one,' indeed, is the ear, for it is with the ear that one hears here far or widely.

कान ही बहुत सुननेवाला है । क्यों कि यहां कान से ही हरएक बहुत और दूरसे सुनता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१२४) अश्वो न देववाहन इति । मनो वै देववाहनं मनो हीदं मनस्विनं भूयिष्ठं वनीवाह्यते । मन एवैतया समिन्धे ।

Further, 'yea, as a horse that bears to the Devas;' that which conveys to the Devas is indeed the mind, for it is the mind which chiefly conveys the wise man to the Devas: the mind he accordingly kindles with this.

देवों का वाहन अश्व है । मन ही देवोंका वाहन अश्व है । क्यों कि मनही बुद्धिमान पुरुषको मुख्यतः देवोंतक पहुंचाता है । इस लिये इससे मन को प्रदीप्त किया जाता है.

चतुर्थ अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(१२५) मनश्च हैव वाक्च युजौ देवेभ्यो यज्ञं वहतः ।

Mind & speech, when yoked together, convey the sacrifice to the Devas.

मन और वाणी मिलकर यज्ञ देवोंतक पहुंचाते हैं ।

ॐ ॐ ॐ

(१२६) त एतद्दक्षिणतः प्रत्युदश्रयन्नुच्छ्रितमिव हि वीर्यम् ।

They therefore stood up erect against the enemies, on the sound side; for strength is, indeed, erect.

इसलिये वे देव शत्रुओंके मुकाबलेमें सीधे सुरक्षित स्थानपर खडे रहे । क्यों कि सीधेपनही बल है ।

ॐ ॐ ॐ

चतुर्थ अध्याय

(ब्राह्मण ५)

(१२७) मा त्वावक्रमिषमिति ।

May I not sin against thee !

मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूंगा ।

ॐ ॐ ॐ

(१२८) ते छायामुपस्थेषमिति ।

May I step into thy shade.

मैं तेरी छायामें रहूं गा ।

ॐ ॐ ॐ

(१२९) ऊर्ध्वोऽध्वर आस्थादिति ।
High stood the deed free from cruelty.
हिंसा रहित कर्म उच्च होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३०) श्रीर्वै शिरस्तस्माद्योऽर्द्धस्य श्रेष्ठो भवत्यसावमुष्यार्द्धस्य शिर इत्याहुः ।

For the head does indeed represent excellence: hence, of one who is the most excellent of a community;' people say that he is 'the head of that community.'

सिर ही श्रेष्ठता है । इस लिये लोकोंमें जो सबसे श्रेष्ठ होता है, उसको सब कहते हैं कि यह उस जाती का सिर है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३१) श्रेयसो वै पापीयान्कृतानुकरोऽनुवर्त्मा भवति ।

Inferior, surely, is he who simply imitates his better's deeds and follows in his wake.

हीन मनुष्य ही श्रेष्ठका केवल अनुकरण करता है और उसके मार्गपर चलता है । (केवल अविचारी अनुकरण करना बुरा है ।)

पंचम अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१३२) ज्यायसस्पतय उ चैवैतन्निह्नुते ।
He also propitiates the Lord of seniority.
वह बडेपनके स्वामीको ही पूजता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३३) जुष्टमद्य देवेभ्योऽनूच्यासमित्येवैतदाह । तद्धि समृद्धं यो जुष्टं देवेभ्योऽनु ब्रवत् ।

'May I this day speak what is agreeable to the

Devas,' for auspicious it is when one speaks what is agreeable to Devas.

मैं आजसे ही देवताओंको जो प्रिय होगा वही बोलूंगा । क्योंकि जो देवोंको प्रिय होता है वही शुभ होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३४) विश्वकर्मन्तनूपा असि ।

O All-maker, thou art the protector of lives !

हे सबकी उत्पत्ति करनेवाले ! तू सबके जीवोंकी रक्षा करनेवाला है ।

ॐ ॐ ॐ

(१३५) विश्वेदेवाः शास्त ।

All ye Devas, instruct me.

हे सब देवो ! मुझे उपदेश कीजिए ।

पंचम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(१३६) ईडामहै देवां ईडेन्यान्नमस्याम नमस्यान् यजाम यज्ञियानिति ।

Let us praise the Devas, the praisworthy ! let us adore the adorable ! let us worship the worshipful !

हम स्तुति करने योग्य देवोंकी ही स्तुति करेंगे, नमन करने योग्य जो होंगे उनकोही नमन करेंगे तथा पूजा करने योग्य जो होंगे उनही की पूजा करेंगे ।

पंचम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१३७) यतरो वै संयत्तयोः पराजयते अप वै संक्रामत्यभितरामु वै जयन्क्रामति तस्मा-दभितरामभितरामेव क्रामेत् ।

Whichever of the two combatants retreats, no doubt, is defeated, and he who advcances abtains victory; therefore one should always advance and not retreat.

युद्ध करनेवालोंमें जो पीछे हटता है, पराजित होता है और जो आगे बढता है, विजय पाता है । इस लिये आगे बढना उचित है ।

पंचम अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(१३८) स्वी ह वै तमर्धं कुरुते श्रियेऽन्नाद्याय यस्मिन्नर्धे भवति य एवं वेद ।

And verily, he who knows this, makes that locality wherein he lives, his own, for his own happiness and supply of food.

जो इस ज्ञान को जानता है वह जहां रहता है उस स्थानको शोभासे और अन्नसे युक्त बनाता है ।

षष्ठ अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१३९) द्विषन्द्विषतेऽरातीयति ।

Enemy seeks to injure enemy.

शत्रु शत्रुकी हानी करनेका अवसर देखता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४०) प्रजा वै पशवो मध्यं ।

Offspring and cattle, indeed, constitute the centre.

बालबच्चे और पशु ही संसार का मध्य है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४१) नानुव्याहारीव स्यात् । उत ह्येवंवित्परो भवति ।

One should not utter imprecations: for whosoever thus understands this has the advantage.

शाप देना, कोपना अच्छा नहीं । जो यह जानता है उसका भला होता है ।

ॐ ॐ ॐ

(१४२) सर्वं वै संवत्सरः । सर्वं वा अक्षय्यम् ।

Assuredly the year is all, and the all (universe) is imperishable.

निश्चयसे संवत्सर ही सबकुछ है और सब अविनाशी (जगत्) है ।

षष्ठ अध्याय

(ब्राह्मण २)

(१४३) यज्ञेन वै देवा इमां जितिं जिग्युः ।

Verily, by means of the sacrifice Devas made that conquest.

निश्चयसे स्वार्थ त्यागसे ही देवोंने इस विजयको प्राप्त किया ।

ॐ ॐ ॐ

(१४४) श्रमेण ह स्म वै तद्देवा जयन्ति यदेषां जय्यमास ।

By toil, the Devas indeed gained what they wished to gain.

परिश्रम करनेसे ही देवोंको विजय प्राप्त होता है ।

षष्ठ अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१४५) द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति। आर्द्रं चैव शुष्कं च। यच्छुष्कं तदाग्नेयं। यदार्द्रं तत्सौम्यं।

Two-fold, verily, is this, there is no third: to wit, the moist and the dry; and what is dry, that relates to Agni; and what is moist, that relates to Soma.

यहां केवल दो हैं तीसरा नहीं है। गीला और शुष्क। जो शुष्कत्व है वह अग्नि का है और जो गीलापन है वह सोमका है।

ॐ ॐ ॐ

(१४६) अग्नीषोमयोर्हैवैतावती विभूतिः प्रजातिः।

So manifold is the power, the generative force of Agni & Soma.

इस प्रकार अग्नि और सोमकी उत्पादक शक्ति विविध प्रकारकी है।

ॐ ॐ ॐ

(१४७) सूर्य एवाग्नेयः। चन्द्रमा सौम्यः। अहरेवाग्नेयं। रात्रिः सौम्या। य एवापूर्यतेऽर्द्धमासः स आग्नेयो योऽपक्षीयते स सौम्यः।

The Sun, indeed, relates to Agni and the Moon to Soma; the day relates to Agni and the night to Soma; The waxing half-moon relates to Agni and the waning one to Soma.

सूर्य, दिन और शुक्लपक्ष आग्नेय हैं और चंद्र, रात्री, और कृष्णपक्ष सोमीय हैं।

षष्ठ अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(१४८) तद्वा एतत् । अविक्षीणमेव देवानामन्नाद्यं परिप्लवते ।

Now it is only when that food of the Devas is unfailing that it comes back (to men).

जब देवोंका अन्न क्षीण नहीं होता तब ही वह आता है (मनुष्यों-के पास)

सप्तम अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१४९) मा वस्तेन ईशत माऽघशंसः ।

No thief, no ill wisher may lord it !

चोर अथवा पापी उसका स्वामी न बने ।

सप्तम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(१५०) ऋणं ह वै जायते योऽस्ति । स जायमान एव देवेभ्य ऋषिभ्यः पितृभ्यो मनुष्येभ्यः ॥

Verily, who-ever exists, he, in being born, is born as a debt to the, Devas to sages, to the fathers and to men.

जो मनुष्य जन्मता है वह देव, ऋषि, पितर और मनुष्योंका ऋणी होता है ।

सप्तम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१५१) यक्षत्स्वं महिमानमिति । यत्र वा अदो देवता आवाहयति तदपि स्वं महिमानमावाहयति ।

May he sacrifice to his own greatness ! when on that occasion, he asks him to bring hither the Deities, he also makes him bring hither his own greatness.

वह अपनी महत्ताके लिये यज्ञ करे । जब उस समय देवताओंका आवाहन होता है वह भी स्वकीय महत्वकाही आवाहन है ।

ॐ ॐ ॐ

(१५२) नग्नताया वै बिभेमि ।

I dread nakedness.

नग्नता का भय है ।

सप्तम अध्याय

(ब्राह्मण ४)

(१५३) प्रजापतिर्वै स्वां दुहितरमभिदध्यौ । दिवं वोषसं वा मिथुन्यनेया स्यामिति तां संबभूव ॥ १ ॥ तद्वै देवानामाग आस । य इत्थं स्वां दुहितरमस्माकं स्वसारं करोति ।

Prajapati conceived a passion for his own daughter,—either the Sky or the Dawn. 'May I pair with her !' Thus thinking he united with her. This, assuredly, was a sin in the eyes of Devas. 'He who acts thus towards his daughter, our sister, commits a sin,' They thought.

प्रजापतिनें अपनी दुहिता—द्यौ अथवा उषा—का बुरी दृष्टि से चिंतन किया । इस के साथ रहूंगा ऐसा विचार करके संग किया । देवों के मत से वह पाप हुआ । देव कहने लगे कि जो इस प्रकार अपनी दुहिता के साथ, अर्थात् हमारी बहिन के साथ, बर्ताव करेगा वह पाप करेगा ।

ॐ ॐ ॐ

(१५४) शांतिरापस्तदद्भिः शांत्या शमयते ।

Water is a means of purification, hence he purifies himself with water.

जल शांति (पवित्रता) करनेवाला है इसलिये शांतिकारक जलसे वह अपने आपको शुद्ध करता है ।

अष्टम अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१५५) उपहूतेडा ततुरिति ।···ततुरिति सर्वं ह्येषा पाप्मानं तरति ।

'Hither is called Idâ, the conquering'...because she overcomes evil.

विजयी इडा देवीको इदर बुलाते हैं क्यों कि इडा-(शुद्ध वाणी)- सब दुष्टताका नाश करती है ।

ॐ ॐ ॐ

(१५६) उपहूतः सखा भक्ष इति । प्राणो वै सखा भक्षः ।

'Hither is called the friend, the food !' the friend the food, doubtless, means breath.

मित्र अर्थात् अन्नको यहां बुलाते हैं । प्राण ही मित्र अन्न है ।

ॐ ॐ ॐ

(१५७) जीवेयं प्रजा मे स्याच्छ्रियं गच्छेयम् ।

May I live long; may I have offsprings, may I obtain prospesity.

मुझे दीर्घ आयु, उत्तम संतान और संपत्ति प्राप्त होवे ।

अष्टम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(१५८) देवानां वै देवाः सन्ति छंदांस्येव पशवो ह्येषां गृहा हि पशवः प्रतिष्ठो हि गृहाः ।

The metres are the Devas of Devas, since they are their cattle, and cattle means home, and home is a safe resting place.

छंद देवोंके देव हैं, क्योंकि वे पशु हैं, पशु ही घर हैं और घर ही सुरक्षित स्थान है ।

अष्टम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१५९) यत्साधु वदेयुः । यत्साधु कुर्युः ।

They should speak what is favourable, that they should do what is favourable (conducive to suceess).

विजय प्राप्त करनेवाला ही भाषण बोले, और कर्म करे । (साधु— विजय प्राप्त करनेवाला)

ॐ ॐ ॐ

(१६०) स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ।

Success to the human.

मनुष्यमात्रका विजयी कल्याण होवे.

नवम अध्याय

(ब्राह्मण १)

(१६१) भद्रमभूत् ।

Successful this has turned out.

यह कल्याण ही हो गया ।

ॐ ॐ ॐ

(१६२) मा ह कस्माच्चन प्रत्रासीः।

Mayest thou not be afraid of anybody.

किसीसे न डरो।

ॐ ॐ ॐ

(१६३) स्वस्ति नो देवत्रास्तु स्वस्ति मनुष्यत्रेति।

May we enjoy bliss among the Devas, bliss among men.

देवों में हमको कल्याण प्राप्त होवे, तथा मनुष्यों में भी कल्याण हमको प्राप्त होवे.

नवम अध्याय

(ब्राह्मण २)

(१६४) गातुविदो हि देवाः।

Devas are, indeed, the finders of path.

मार्ग जाननेवाले देव होते हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१६५) गातुमितेति।

Walk in the Path.

मार्गपरसे चलो.

नवम अध्याय

(ब्राह्मण ३)

(१६६) सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन।

We have united with lustre, with vigour, with the bodies, and with the happy spirit.

तेज, बल, शरीर और उत्तम मन के साथ हम हो गये हैं।

ॐ ॐ ॐ

(१६७) शतं वर्षाणि जीव्यासम् ।

May I live a hundred years.

मैं सौ वर्ष जीवित रहूं गा ।

❀ ❀ ❀

(१६८) भूयांसि शताद्वर्षेभ्यः पुरुषो जीवति ।

Man lives even longer than a hundred years.

मनुष्य सौ से अधिक वर्ष भी जीवित रहता है ।

❀ ❀ ❀

(१६९) इदं मे अयं वीर्यं पुत्रोऽनुसन्तनवदिति ।

May this son carry on this manly deed of mine.

यह मेरा पौरुष कर्म मेरा पुत्र आगे चलावे ।

प्रथम कांड समाप्त ।

जीवन का सुधार।

वेद के स्वाध्याय से ही मनुष्योंके जीवन का सुधार हो सकता है।

(१) यजुर्वेद अ० ३० की व्याख्या। **नरमेध।** "मनुष्योंकी सच्ची उन्नति का सच्चा साधन।" मूल्य १) एक रुपया।

(२) यजुर्वेद अ० ३२ की व्याख्या। **सर्वमेध।** "एक ईश्वरकी उपासना।" मू. ॥) आठ आने।

(३) यजुर्वेद अ० ३६ की व्याख्या। **शांतिकरण।** "सच्ची शांतिका सच्चा उपाय।" मू. ॥)

(४) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥) आठ आने।

(५) ऋग्वेदमें रुद्र देवता। मू. ॥=) दस आने।

(६) मानवी आयुष्य। मू. ≡) तीन आने।

(७) ३३ देवताओंका विचार। मू. =) दो आने।

(८) संध्योपासना। प्रतिदिन का योगाभ्यास। मूल्य १॥) डेढ रु.।

(९) संध्याका अनुष्ठान। मू. ॥) आठ आने।

(१०) वैदिक राज्य पद्धति। मू. =) दो आने।

(११) वैदिक सभ्यता। मू. ≡) तीन आने।

(१२) वेदमें वैद्यशास्त्र। मू. ≡) तीन आने।

(१३) शतपथ बोधामृत। मू. ।) चार आने।

(१४) वेदका स्वयंशिक्षक। मू. १॥) डेढ रु.।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल, औंध (जि. सातारा.)

स्वाध्यायान्मा प्रमदः ॥ तै. उ. १।११

स्वाध्याय करनेमें सुस्ती न कीजिए।

"वेदका पढना पढाना, सुनना सुनाना सब आर्योंका परम धर्म है।"

"वैदिक धर्म"

वैदिक धर्मके तत्वोंका प्रचार करनेवाला 'मासिक पत्र'। केवल वेदका विचार करनेवाला मासिक पत्र संपूर्ण भारत वर्षमें यह ही एक है। वार्षिक मूल्य डाकव्यय आदि समेत ३॥) साढेतीन रु० है।

शीघ्र मंगवाइए और अपने मित्रोंको ग्राहक बननेके लिये उत्साहित कीजिए।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल,
औंध (जि. सातारा)

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है । इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दस नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड आप को लगाया जायेगा ।

10 OCT 1974 V. 962 / 12364			